ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के किसानों पर प्राकृतिक आपदा (COVID-19 एवं ओलावृष्टि) का दुष्प्रभाव: एक व्यैक्तिक अध्ययन

सुनील कुमार मेहता*, अनुराग माली**

*शोधार्थी, मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
Email ID: sunilmehta9098@gmail.com, Mo. No. +918319019232

**शोधार्थी, मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
Email ID: anuragmali007@gmail.com, Mo. No. +919977006291

सारांश :-

जब भी प्रकृति अपना रौद्र रूप धारण करती है तो इसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव किसानों को झेलना पड़ता है। किसान भारत में अन्नदाता कहलाते है जो COVID-19 के प्रभाव से सम्पूर्ण तालाबंदी (लाॅकडाउन) में भी राष्ट्र के पोषण के लिए फसलों का उत्पादन कर रहे हैं। प्रस्तुत शोधपत्र छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्व में जशपुर जिले के पत्थलगांव तहसील में लूड़ेग एवं झिमकी गांव के किसानों की व्यैक्तिक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में यह दर्शाने का प्रयास किया गया है की एक ओर जहां तालाबंदी (लाॅकडाउन) की स्थिति में किसानों के फसलों की बिक्री नगण्य है जिससे लागत खर्च भी प्राप्त नही हो पा रही वही दूसरी ओर ओलावृष्टि के कारण शोधक्षेत्र के किसानों के सम्पूर्ण फसल क्षतिग्रस्त हो गए। ओलावृष्टि के कारण जिन किसान परिवारों के घरों के छत सिमेंट, कराकट, एसबेस्टस तथा खपरैल के बने थे वे पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो चुके है वहीं दूसरी तरफ इन्हे पुनर्निमित करने हेतु तालाबंदी (लाॅकडाउन) के समय काफी दिक्कतों का सामना भी करना पड़ रहा है। फलदार पेंड़-पौधे भी प्रकृति के इस कहर से उपभोग करने युक्त नहीं बचे। भारत मे COVID-19 के प्रभाव से तालाबंदी (लाॅकडाउन) और ओलावृष्टि स्वरूप प्राकृतिक आपदा ने किसानों को शारीरिक ही नही वरन मानसिक व्याधियाँ भी प्रदान कर रहा है।

कुंजी शब्द -

किसान, फसल, COVID-19, ओलावृष्टि, प्राकृतिक आपदा।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

प्रस्तावना :-

COVID-19 नामक वैश्विक महामारी में डॉक्टर, पुलिस एवं प्रशासन जिस प्रकार से अपना कर्तव्य निर्वहन कर रहे हैं वह युद्धस्तर पर है। इस तालाबंदी (लाॅकडाउन) में लगभग सभी कार्य अवरोधित है, किंतु किसान परिवार अभी भी दिन-रात परिश्रम करके राष्ट्र के पोषण के लिए तत्पर प्रयासरत हैं। व्यक्ति सभी कार्य छोड़कर अपने घर में रहकर COVID-19 से सुरक्षित रह सकते हैं किन्तु बिना भोजन के नहीं रह सकते। भोजन प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिसे पैदा करने वाले किसान हैं। जशपुर जिला झारखंड और ओडिशा की सीमा के समीप छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित है।[1] जशपुर जिला के पत्थलगाँव तहसील में कुल 107 गाँव है।[2] जिसमें से लूड़ेग एवं झिमकी गांव (ओलावृष्टि शोधक्षेत्र) में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन इसलिए यथार्थ है क्योंकि किसान फसल पैदा करने के लिए अपना खून-पसीना तथा जी-जान एक कर देता है और फसल एवं सब्जियों के क्रय एवं मूल्य निर्धारण करने का भी हक उसे नहीं मिल पाता। मिट्टी के साथ किसान का बहुत ही गहरा नाता होता है एवं प्रकृति उसका साथी होता है किंतु जब प्रकृति रौद्र रूप लेती है तो सबसे ज्यादा नुकसान किसानों को ही भुगतना पड़ता है क्योंकि उनके द्वारा धन-संपत्ति सिर्फ खेतों को ही माना जाता है जो खुले आसमान में होता है। किसान के पास धन नहीं होते फिर भी वह कर्ज लेकर खेती करते हैं और दूसरों का पेट भरते हैं। किसान खेती करना नहीं छोड़ते चाहे प्रकृति उनके साथ कितना भी दुव्र्यवहार क्यों न करे। जब प्रकृति के द्वारा किसानों का नुकसान होता है तो सरकार को इनका मुआवजा यथासंभव शीघ्र से शीघ्र उपलब्ध करा देना चाहिए इससे किसानों की समस्या समाप्त तो नहीं होगी किन्तु समस्या थोड़ी कम जरूर हो सकती है जिससे उनको विपरीत परिस्थिति में लड़ने का साहस मिलता है।

शोध का उद्देश्य :-

1. प्राकृतिक आपदा (COVID-19 एवं ओलावृष्टि) का किसानों पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का व्यैक्तिक अध्ययन करना।

शोध-प्रविधि एवं पद्धति :-

शोध की प्रकृति - शोध की प्रकृति गुणात्मक प्रकार की है।

शोध-प्रारूप - शोध-प्रारूप विवरणात्मक एवं अनवेषणात्मक प्रकार का है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

निदर्षन - उद्देश्यपूर्ण निदर्षन पद्धति के द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के जशपुर जिले के पत्थलगाँव तहसील के अन्तर्गत आने वाले ओला से प्रभावित लूड़ेग एवं झिमकी गाँव के 6 किसानों का व्यैक्तिक अध्ययन के लिये लिए चयन किया गया।

तथ्य संकलन - तथ्य संकलन के लिए व्यैक्तिक अध्ययन एवं साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है जो कि सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं से मोबाइल फोन पर ऑडियो एवं विडियो कॉल के माध्यम से शोधपत्र के शीर्षक से संबंधित साक्षात्कार के द्वारा तथ्य संकलन किया गया। तथ्य संकलन के लिये छायाचित्र विधि का भी उपयोग किया गया है।

परिणाम एवं विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोधपत्र में जानने का प्रयास किया गया कि अध्ययनित क्षेत्रों में ब्व्टप्क्.19 लॉकडाउन एवं प्रकृति के बदलते परिवेश के कारण किसानों के जीवन पर स्थिति एवं प्रभाव का स्तर कितना होगा।

व्यैक्तिक अध्ययन- 1

किसान का नाम - नरेश सिंह (परिवर्तित नाम),

उम्र - 53 वर्ष

नरेश सिंह ग्राम लुड़ेग के रहने वाले एक मध्यमवर्गीय किसान हैं जिनके जीवनयापन का मुख्य साधन कृषि है। कृषि कार्य करने के पश्चात् प्राप्त उत्पादन को बाजार में बेचकर उसी पैसे से अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। कोरोना वायरस के कारण देशव्यापी तालाबंदी होने से सब्जी का मूल्य जिला मुख्यालय के द्वारा तय कर दिया गया है जो कि पूर्व में बिक रहे सब्जी के मूल्य से काफी कम है। मार्च-मई में शादी का लगन रहता था ऐसे समय में सब्जी का मूल्य अपेक्षाकृत अधिक था किन्तु लॉकडाउन में अधिकारीयों द्वारा निर्धारित दर से सब्जियों को बेचकर प्राप्त धनराशि से परिवार का गुजारा करना मुश्किल हो गया है। परिवार की ऐसी बिगड़ी स्थिति में प्रकृति अपना रौद्र स्वरूप दिखा गई। इनके गांव लुडेग में जमकर बड़े आकार की ओलावृष्टि हुई जिससे इनकी सारी फसल नष्ट हो गई और अभी उनके पास जीवनयापन करने के लिए अन्य कोई भी साधन नहीं है जिससे अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

ओले एवं पानी मे डूबे गेहू के फसल

ओले का आकार

व्यैक्तिक अध्ययन- 2

किसान का नाम - राजेन्द्रराम (परिवर्तित नाम),

उम्र - 45 वर्ष

राजेन्द्रराम भी ग्राम लुड़ेग के निवासी हैं यह भी एक मध्यमवर्गीय किसान हैं इनके पास कुल 5 एकड़ जमीन है जिसमें वे आधुनिक तकनीक से कृषि कार्य करते हैं। छत्तीसगढ़ की टमाटर की राजधानी कही जाने वाली लुड़ेग में सबसे अधिक टमाटर की खेती होती है और लगभग प्रत्येक कृषक परिवार अपने खेतों में भारी मात्रा में टमाटर लगाते हैं। इस गांव में टमाटर का उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में होती है, जिसे बेचकर प्रत्येक किसान अपने परिवार का पेट भरते हैं लेकिन जिला अधिकारी के द्वारा निर्धारित मूल्य एवं तालाबंदी के कारण उत्पादित फसल एवं सब्जी का खपत बाजार में कम हो पा रहा है एवं धनराशि भी कम प्राप्त हो रही है। ऐसे में ही ग्राम लुड़ेग को प्रकृति का नजर लग गया एवं ताबड़तोड़ ओले गिरने लगे जिससे इनकी टमाटर एवं अन्य सब्जी पूरी तरीके से नष्ट हो गये एवं इनके पास अपने परिवार का पेट भरने के लिए क्या करें इसके लिए भी बहुत बड़ा प्रश्नवाचक चिन्ह लग गया है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

ओले से प्रभावित टमाटर की खेती

ओले से प्रभावित फसल

व्यैक्तिक अध्ययन- 3

किसान का नाम - दीपक सिंह (परिवर्तित नाम),

उम्र - 42 वर्ष

दीपक सिंह ग्राम लुड़ेग के एक सीमांत कृषक हैं। इनका भी ओले के बरसात से बहुत ही नुकसान हुआ है इनका एक छोटा सा मकान है जिसका छत सीमेंट से बने हुए एस्बेस्टस का है, जिसमें इनकी पूरी परिवार निवास करती है। किंतु बड़ी आकार के ओले के बरसात ने इनके छत की धज्जियां उड़ा कर रख दी। घर के अंदर धूप ऐसे आ रहा है जैसे कोई छत में बहुत सारा रोशनदान बना दिया हो। घर के अंदर रखा हुआ अनाज व अन्य सामग्री भी ओले एवं बरसात के कारण खराब हो गया। साथ ही साथ इनके फसल का भी काफी नुकसान हुआ है। इनके गेहूं का फसल ओला के कारण टूट-टूट कर खेत में रह गया और बारिश में डूब गया। दीपक सिंह एवं उनका परिवार इन सभी नुकसान के कारण मानसिक रूप से अस्वस्थ्य हो गये हैं।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

ओले एवं पानी मे डूबे गेहू के फसल

ओले के कारण घर की छत का टूटा हुआ दृश्य

व्यैक्तिक अध्ययन- 4

किसान का नाम - जयलाल सिंह (परिवर्तित नाम),

उम्र - 47 वर्ष

जयलाल सिंह ग्राम झिमकी के निवासी हैं यह भी एक मध्यमवर्गीय कृषक है जिनके परिवार का भरण-पोषण कृषि कार्य पर निर्भर है। ओला के कारण इनका पूरा फसल नष्ट हो गया। तैयार सब्जी जो उत्पादन दे रहे थे वह भी पूरे तरीके से नष्ट हो गए। कुछ सब्जी लगाए हुए ज्यादा दिन नहीं हुए थे वह जमीन से थोड़ा ही निकला था, जिसे भी ओला ने अपने चपेट में ले लिया और वह सब्जी धरती में ही समा गया। इनका एक आम का उद्यान भी है जिसके द्वारा गर्मी के मौसम में आम बेचकर अपने परिवार का खर्चा चलाते थे किंतु प्रकृति के कहर ने उसे भी पूरी तरीके से विध्वंस कर के रख दिया। अब इनके पास कोई भी साधन नहीं जिससे अपने परिवार का पेट भर सके। जयलाल सिंह कृषि कार्य करने के लिये साहूकार से कर्ज में पैसे लिये थे जिसे वह सब्जी बेचकर चुकाना चाहते थे किन्तु प्रकृति के कहर ने इन्हे इस कदर मजबूर कर दिया कि इनके पास सोंचने समझने की शक्ती भी क्षीण होते जा रही है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

ओले के कारण प्रभावित आम का उद्यान

ओले के कारण सब्जी बढ़ने से पहले ही खत्म

निष्कर्ष :-

इस तालाबंदी के कारण कृषक परिवार के जीवन में बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, क्योंकि उनका सब्जी पहले की तुलना में कम मूल्य में बिक रहा है। ऐसी स्थिति में जशपुर जिला के पत्थलगांव तहसील के ग्राम लूड़ेग एवं झिमकी में प्रकृति ने ऐसा भयावह रूप धारण कर लिया और बड़े-बड़े ओला का बरसात करने लग गया, जिसके कारण खेत में लगे हुए सभी साग-सब्जी एवं फसल पूरी तरीके से बर्बाद हो गए। गाँव में लगभग अधिकतम लोगों का घर कच्चे प्रकार का है जिससे परिवार के सदस्य को रहने के लिए अब घर नहीं बचा क्योंकि जिनके घर का छत खपड़ा एवं सीमेंट से बने एस्बेस्टस/कराकट का था वह सभी टूट चुके हैं। बहुत से कृषक कृषि कार्य करने के लिये साहूकार अथवा बैंको से कर्ज में पैसे लिये थे जिसे वह सब्जी बेचकर चुकाने का सोंचे थे किन्तु प्रकृति को ऐसा मंजूर नही था उसके कहर ने इन्हें कहीं का नहीं छोड़ा। लोगों को अन्न देने वाला अन्नदाता आज खुद रहने एवं खाने को तरसने लगे हैं ऐसा हालत हो गया है। प्रकृति की इस रौद्र रूप ने किसानों को मानसिक रूप से कमजोर बना दिया है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

सुझाव:-

शोध अध्ययन से संबंधित यह सुझाव है कि प्रत्येक जिला में आपदा प्रबंधन विभाग होता है जिसका उद्देश्य प्रकृति द्वारा निर्मित आपदाओं से प्रभावित प्रत्येक परिवार को मदद् करना होता है जिससे परिवार को इस विपरीत परिस्थिति में सहारा मिल सके अतः सरकार एवं जिला अधिकारीयों से अपील है कि ऐसे परिस्थिति में प्रभावित किसानों को अपने कोष से मद्द किया जाये।

संदर्भ सूची:-

Web link

1. https://jashpur.nic.in/%e0%a4%9c%e0%a4%bf%e0%a4%b2%e0%a5%87%e0%a4%95%e0%a5%87%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a5%87%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82/. (April 28, 2020).

2. file:///D:/My%20Otherwork/Research%20Paper/Villages%20&%20Towns%20in%20Pathalgaon%20Tehsil%20of%20Jashpur,%20Chhattisgarh.html. (April 28, 2020).

Copyright © 2020 Authors